मुख्य परीक्षा

UNFCCC का पक्षकारों का सम्मलेन(COP)-30

संदर्भ

ब्राज़ील के बेलेम में आयोजित COP30 (UNFCCC) को "सत्य का COP", "कार्यान्वयन का COP", और "अनुकूलन का COP" नाम दिए जाने के बावजूद, यह एक **कमज़ोर और समझौतापूर्ण अंतिम परिणाम** के साथ समाप्त हुआ।

COP30 के प्रमुख परिणाम -

- **बेलेम पैकेज स्वीकृत:** पेरिस समझौते के कार्यान्वयन में तेज़ी लाने के लिए 29 निर्णयों का समूह, जिसमें वित्त, अनुकूलन ट्रैकिंग, लैंगिक समावेशन और सहयोग पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।
- **जलवायु वित्त प्रतिबद्धता:** 2035 तक प्रतिवर्ष 1.3 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर जुटाने का संकल्प, जिसमें कमज़ोर देशों के लिए अनुकूलन वित्त को तीन गुना बढ़ाना शामिल है।
- **वैश्विक कार्यान्वयन त्वरक और 1.5°C मिशन:** एनडीसी प्रगति की निगरानी, जवाबदेही में सुधार और उत्सर्जन अंतर को कम करने के लिए तंत्र शुरू किए गए।
- **न्यायसंगत संक्रमण तंत्र:** जीवाश्म ईंधन पर निर्भर श्रमिकों और स्थायी मार्गों पर संक्रमण करने वाली अर्थव्यवस्थाओं के लिए समर्थन ढाँचा।
- **रोडमैप की घोषणा**:
  - वनों की कटाई को रोकने और उलटने के लिए रोडमैप।
  - राष्ट्रीय परिस्थितियों को दर्शाते हुए, उचित जीवाश्म-ईंधन परिवर्तन के लिए रोडमैप।
- **बेलेम स्वास्थ्य कार्य योजना:** जलवायु कार्रवाई और सार्वजनिक स्वास्थ्य को जोड़ने वाली पहली वैश्विक पहल, जिसका उद्देश्य जलवायु-प्रतिरोधी स्वास्थ्य प्रणालियाँ बनाना है।
- **उष्णकटिबंधीय वन सदैव सुविधा(Tropical Forests Forever Facility):** वन संरक्षण के लिए दीर्घकालिक प्रदर्शन-आधारित निधि, जिसमें 20% मूलनिवासी और स्थानीय समुदायों के लिए आरक्षित है।
- **समता और समावेशी शासन:** समता, जलवायु न्याय, लैंगिक रूप से संवेदनशील नीतियों, मूलनिवासी नेतृत्व और अंतर-पीढ़ीगत अधिकारों पर ज़ोर दिया गया।
- **जलवायु-व्यापार संवाद:** जलवायु लक्ष्यों को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के साथ सामंजस्य स्थापित करने और कार्बन सीमा समायोजन जैसे संघर्षों को कम करने के लिए एक नया मंच।
- **वैश्विक मुतिराओ समझौता:** बहुपक्षीय सहयोग और सामूहिक जलवायु उत्तरदायित्व को बढ़ाने की प्रतिबद्धता।

प्रमुख पक्षकारों का सम्मलेन(COP) के परिणाम -

COP	मुख्य परिणाम
COP1 - बर्लिन (1995)	बर्लिन अधिदेश ने **विकसित देशों के लिए बाध्यकारी उत्सर्जन कटौती की प्रक्रिया को अपनाया और आरंभ किया।**
COP3 - क्योटो (1997)	**क्योटो प्रोटोकॉल को अपनाया गया।** स्वच्छ विकास तंत्र (CDM), संयुक्त कार्यान्वयन (JI), और उत्सर्जन व्यापार।
COP7 - माराकेच (2001)	माराकेच समझौते को अंतिम रूप दिया गया।

COP13 - बाली (2007)	बाली रोडमैप को अपनाया गया। **REDD+ तंत्र लॉन्च किया।**
COP15 - कोपेनहेगन (2009)	कोपेनहेगन समझौता (राजनीतिक समझौता)। **2°C की सीमा को मान्यता दी गई। 2020 तक 100 बिलियन डॉलर प्रति वर्ष जलवायु वित्त का संकल्प।**
COP21 - पेरिस (2015)	**पेरिस समझौते को अपनाया गया।** इसका **मुख्य उद्देश्य वैश्विक तापमान वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तरों से 2°C से नीचे रखना और इसे 1.5°C तक सीमित रखने के प्रयास करना** है।
COP26 - ग्लासगो (2021)	ग्लासगो जलवायु समझौता। **कोयले को चरणबद्ध तरीके से कम करना; जीवाश्म ईंधन सब्सिडी में कटौती। वैश्विक मीथेन प्रतिज्ञा का शुभारंभ।**
COP27 - शर्म अल-शेख (2022)	हानि एवं क्षति निधि को मंजूरी दी गई। अनुकूलन और वित्तीय वितरण पर ध्यान केंद्रित किया गया।
COP28 - दुबई (2023)	**पहला ग्लोबल स्टॉकटेक पूरा हुआ।** जीवाश्म ईंधन से दूर जाने का आह्वान। हानि और क्षति निधि का संचालन। नवीकरणीय ऊर्जा को तिगुना और ऊर्जा दक्षता को दोगुना करने का संकल्प।
COP29 - बाकू (2024)	नए सामूहिक परिमाणित लक्ष्य (2025 के बाद का वित्त) के तत्वों पर बातचीत। जलवायु वित्त संरचना पर प्रगति।

जलवायु लक्ष्यों को पूरा करने में प्रमुख बाधाएँ -

- **अपर्याप्त जलवायु वित्त:** अनुकूलन वित्त गंभीर रूप से **कम वित्तपोषित** है, जिसे **आवश्यक स्तरों का एक तिहाई से भी कम प्राप्त होता है।**
    - उदाहरण के लिए, अनुकूलन निधि को केवल 135 मिलियन डॉलर (लक्ष्य: 300 मिलियन डॉलर) प्राप्त हुए। और हानि एवं क्षति निधि को केवल 250 मिलियन डॉलर प्राप्त हुए, जिसे नगण्य माना गया।
- **भू-राजनीतिक विभाजन और बोझ-साझाकरण विवाद:** विकसित और विकासशील देशों के बीच ज़िम्मेदारियों को न्यायसंगत तरीके से कैसे वितरित किया जाए, इस पर देश विभाजित हैं, ख़ासकर निगरानी और जवाबदेही तंत्रों के संबंध में।
    - अमेरिका और चीन के बीच असंगत सहयोग सामूहिक वैश्विक प्रगति को और कमज़ोर करता है।
- **कमज़ोर NDC (राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान) महत्वाकांक्षा:** वर्तमान NDC 1.5°C मार्ग से बहुत पीछे हैं।
    - उदाहरण के लिए, UNEP की 2025 उत्सर्जन अंतर रिपोर्ट इंगित करती है कि 2035 तक केवल 15% की कमी आएगी, जबकि 2019 के स्तर से 45–60% की कमी आवश्यक है।
- **बड़ा कार्यान्वयन अंतर:** जहाँ लक्ष्य मौजूद हैं, वहाँ भी ज़मीनी कार्रवाई धीमी है। कोयले को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करना धीमा बना हुआ है, और जीवाश्म ईंधन में निवेश जारी है।
    - उदाहरण के लिए, क्लाइमेट एक्शन ट्रैकर 2030 तक आवश्यक कटौती में 29-32 गीगाटन CO_2e का अंतर दिखाता है।
- **प्रौद्योगिकी तक पहुँच और क्षमता की बाधाएँ:** स्वच्छ प्रौद्योगिकियों तक असमान पहुँच प्रगति को सीमित करती है, ख़ासकर विकासशील क्षेत्रों में।
    - उदाहरण के लिए, अफ़्रीका की नवीकरणीय क्षमता (2024 में लगभग 70 GW) यूरोप की 800+ GW का एक अंश मात्र है।
- **कमज़ोर डेटा सिस्टम और रिपोर्टिंग चुनौतियाँ:** अपर्याप्त GHG (ग्रीनहाउस गैस) इन्वेंट्री और असंगत रिपोर्टिंग जवाबदेही को कमज़ोर करती है।
    - उदाहरण के लिए, 133 विकासशील देशों में से आधे से ज़्यादा ने 1997-2019 तक इन्वेंट्री तैयारी में बहुत कम प्रगति दिखाई।

आगे की राह -

- **स्पष्ट क्षेत्रीय मार्गों के साथ एनडीसी महत्वाकांक्षा को मजबूत करना:** देशों को बिजली, परिवहन, उद्योग और कृषि के लिए स्पष्ट योजनाओं के साथ 1.5 डिग्री सेल्सियस-संरेखित एनडीसी प्रस्तुत करना चाहिए।
    - अनिवार्य पांच साल के एनडीसी अपडेट और नेट-जीरो मार्ग के साथ संरेखण को मजबूत यूएनएफसीसीसी समीक्षा तंत्र के तहत लागू किया जाना चाहिए।
- **नीति और निवेश में बदलाव के माध्यम से कार्यान्वयन में तेजी लाना:** सरकारों को जीवाश्म ईंधन सब्सिडी को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करना चाहिए, नवीकरणीय ऊर्जा अधिदेश को अपनाना चाहिए, और कोयला सेवानिवृत्ति योजनाओं को फास्ट-ट्रैक करना चाहिए।
    - निगमों को जलवायु जोखिमों का खुलासा करने, ऑफसेट पर अधिक निर्भरता से बचने और उत्सर्जन-कटौती प्रौद्योगिकियों में सीधे निवेश करने की आवश्यकता होनी चाहिए।
- **स्केल-अप और पूर्वानुमानित जलवायु वित्त प्रदान करना:** विकसित देशों को 100 बिलियन डॉलर की प्रतिबद्धता का सम्मान करना चाहिए और उससे आगे निकलना चाहिए और स्पष्ट समयसीमा के साथ 1.3 ट्रिलियन डॉलर के लक्ष्य को संचालित करना चाहिए।
    - अनुकूलन वित्त, रियायती ऋण और अनुदान-आधारित सहायता के लिए समर्पित खिड़कियों को कमजोर देशों के लिए प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
- **प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और क्षमता निर्माण का विस्तार करना:** नवीकरणीय, भंडारण और कार्बन-कैप्चर अंतराल को पाटने के लिए वैश्विक प्रौद्योगिकी साझेदारी स्थापित करना।
    - दक्षिण-दक्षिण और उत्तर-दक्षिण सहयोग के माध्यम से ग्रिड आधुनिकीकरण, एमआरवी (माप, रिपोर्टिंग, सत्यापन) क्षमता और कौशल विकास में विकासशील देशों का समर्थन करना।
- **एक जन-केंद्रित न्यायसंगत परिवर्तन सुनिश्चित करना:** प्रभावित श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा, रीस्किलिंग, रोजगार-सृजन कार्यक्रमों और सुरक्षा जाल के साथ राष्ट्रीय न्यायसंगत परिवर्तन योजनाएं बनाना।
    - समावेशी और न्यायसंगत संक्रमण मार्ग सुनिश्चित करने के लिए स्थानीय समुदायों, स्वदेशी समूहों और श्रम संस्थानों को शामिल करना।

स्रोत: डीटीई

G20 शिखर सम्मेलन 2025

संदर्भ

20वां G20 शिखर सम्मेलन 2025, जोहान्सबर्ग में अफ्रीकी धरती पर पहली G20 बैठक के रूप में आयोजित किया गया, जिसका विषय था "एकजुटता, समानता, स्थिरता" और इसका समापन जोहान्सबर्ग नेताओं के घोषणापत्र को अपनाने के साथ हुआ।

G20 शिखर सम्मेलन के बारे में -

- **उत्पत्ति:**
    - 1997-98 के एशियाई वित्तीय संकट के बाद वैश्विक वित्तीय स्थिरता को मज़बूत करने हेतु वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक गवर्नरों के लिए एक मंच के रूप में गठित।
    - समय के साथ, इसका एजेंडा समष्टि अर्थशास्त्र से आगे बढ़कर व्यापार, जलवायु परिवर्तन, स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा परिवर्तन और डिजिटल शासन को भी शामिल करता गया।
    - 2008-09 के वैश्विक वित्तीय संकट के दौरान शीर्ष-स्तरीय राजनीतिक समन्वय की आवश्यकता को समझते हुए इसे नेताओं के स्तर तक उन्नत किया गया।
    - 2009 से, नेताओं का वार्षिक शिखर सम्मेलन(**annual Leaders' Summits**) केंद्रीय निर्णय लेने वाला मंच बन गया है।
- **संघटन:**
    - **इसमें 19 प्रमुख अर्थव्यवस्थाएं + यूरोपीय संघ (EU) + अफ्रीकी संघ (AU) शामिल हैं।**
    - **भारत इसका संस्थापक सदस्य है।**
    - मेजबान अध्यक्षता के आधार पर गैर-सदस्य विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में शामिल हो सकते हैं।
    - सामूहिक रूप से, G20 अर्थव्यवस्थाएँ वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 85%, वैश्विक व्यापार का 75% से अधिक और विश्व की लगभग 2/3 जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती हैं।
- **अधिदेश:**
    - **अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग के लिए प्रमुख मंच के रूप में कार्य करता है।**
    - **कई डोमेन में वैश्विक शासन को आकार देता है:**
        - आर्थिक विकास और वित्तीय स्थिरता
        - व्यापार और निवेश
        - सतत विकास और जलवायु कार्रवाई
        - वैश्विक स्वास्थ्य, ऊर्जा सुरक्षा, कृषि
        - भ्रष्टाचार विरोधी और डिजिटल शासन
- **संरचना और शासन:**
    - स्थायी सचिवालय या मुख्यालय के बिना संचालित होता है।
    - अध्यक्षता सदस्यों के बीच सालाना बदलती है।
    - निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए ट्रोइका प्रणाली का उपयोग होता है:
        - पिछले अध्यक्ष – वर्तमान अध्यक्ष – आगामी अध्यक्ष
    - 2025 दक्षिण अफ्रीका के अध्यक्ष पद के लिए, ट्रोइका में ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका और संयुक्त राज्य अमेरिका शामिल हैं।

G20 शिखर सम्मेलन 2025 की मुख्य विशेषताएं -

- **122 पैराग्राफ वाले नेताओं के घोषणापत्र (जी20 जोहान्सबर्ग घोषणापत्र) को अपनाना:** सदस्यों ने जलवायु कार्रवाई, बहुपक्षीय सुधार और समतामूलक वैश्विक शासन को कवर करने वाले 122 पैराग्राफ वाले घोषणापत्र पर सहमति व्यक्त की।
    - **उबंटू की भावना:** घोषणा उबंटू के अफ्रीकी सिद्धांत पर आधारित थी, जिसमें साझा जिम्मेदारी और अंतर्संबंध पर जोर दिया गया था।
    - **नवीनीकृत बहुपक्षवाद:** नेताओं ने संघर्षों, असमानता और मानवीय संकटों का सामना करने के लिए गहन बहुपक्षीय सहयोग का आह्वान किया।
    - **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सुधार के लिए समर्थन:** आज की भू-राजनीतिक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को बदलने के लिए मजबूत समर्थन और अफ्रीका, एशिया-प्रशांत और लैटिन अमेरिका के लिए प्रतिनिधित्व के विस्तार पर जोर दिया।
    - **आतंकवाद के खिलाफ स्पष्ट रुख:** घोषणा में सभी रूपों में आतंकवाद की निंदा की गई, जो भारत के लंबे समय से चले आ रहे रुख को प्रतिध्वनित करता है।
    - **उन्नत जलवायु कार्रवाई प्रतिबद्धताएं:** G20 सदस्यों ने जलवायु वित्त को "बिलियन से ट्रिलियन तक" बढ़ाने का समर्थन किया।
        - पेरिस समझौते के अंतर्गत अधिक न्यायसंगत एवं समतापूर्ण ऊर्जा परिवर्तन के प्रति प्रतिबद्धता को सुदृढ़ किया गया।
    - **महिला सशक्तिकरण:** नेताओं ने संरचनात्मक बाधाओं को दूर करने, समान भागीदारी को बढ़ावा देने और शांति और शासन में महिलाओं की भूमिका को पहचानने पर जोर दिया।
- **ऋण संकट और वित्तीय संरचना सुधार:** पक्षपातपूर्ण रेटिंग प्रणालियों को संबोधित करने और "अफ्रीकी जोखिम प्रीमियम" को कम करने के लिए पूंजी आयोग की लागत का शुभारंभ किया गया।
    - अफ्रीका के बढ़ते ऋण बोझ (1.8 ट्रिलियन अमरीकी डालर) और सार्वजनिक सेवाओं पर बढ़ते राजकोषीय तनाव पर प्रकाश डाला।
- **मिशन 300:** विश्व बैंक और एएफडीबी के नेतृत्व में मिशन 300 का समर्थन किया गया, जिसका **लक्ष्य 2030 तक उप-सहारा अफ्रीका में 300 मिलियन लोगों को बिजली प्रदान करना** है।
- **महत्वपूर्ण खनिज मूल्य श्रृंखला ढांचा:** सुरक्षित, संधारणीय महत्वपूर्ण खनिज आपूर्ति श्रृंखलाओं को बढ़ावा देने के लिए G20 फ्रेमवर्क का स्वागत किया गया।
    - विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में अन्वेषण और स्थानीय प्रसंस्करण में निवेश पर ध्यान केंद्रित किया गया।
- **युवा और लैंगिक समावेशन लक्ष्य:** 2030 तक युवा NEET दरों में 5% की कटौती करने के लिए नेल्सन मंडेला बे लक्ष्य को अपनाया। (NEET का अर्थ है - रोजगार, शिक्षा या प्रशिक्षण में नहीं)
    - 2030 तक श्रम बल भागीदारी में 25 प्रतिशत लैंगिक समानता हासिल करने के लिए प्रतिबद्ध।

G20 शिखर सम्मेलन 2025 में भारत द्वारा प्रस्तावित प्रमुख पहल -

- **ड्रग-आतंकवाद वित्तपोषण गठजोड़ को संबोधित करना:** भारत ने वैश्विक ड्रग तस्करी - विशेष रूप से फेंटेनाइल जैसे सिंथेटिक ओपिओइड - को एक प्रमुख सुरक्षा खतरा और आतंकवाद के वित्तपोषण के स्रोत के रूप में चिह्नित किया।
    - वित्तीय ट्रैकिंग, सीमा सहयोग और समन्वित प्रवर्तन पर ध्यान केंद्रित करते हुए नशीली दवाओं के आतंक के बीच सांठगांठ का मुकाबला करने के लिए G20 पहल का प्रस्ताव किया गया।
- **अफ्रीका की विकास प्राथमिकताओं का समर्थन करना:** इस बात पर जोर दिया कि अफ्रीका को भविष्य के वैश्विक विकास ढांचे के लिए केंद्रीय होना चाहिए।

- अगले दशक में पूरे अफ्रीका में 1 मिलियन प्रमाणित प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए G20-अफ्रीका कौशल गुणक पहल का प्रस्ताव रखा।

- **स्वास्थ्य, ज्ञान और अंतरिक्ष में अग्रणी वैश्विक सहयोग:** तीन नई वैश्विक साझेदारियों का प्रस्ताव:
  - समन्वित स्वास्थ्य आपातकालीन कार्रवाई के लिए G20 ग्लोबल हेल्थकेयर रिस्पांस टीम।
  - स्वदेशी औषधीय प्रणालियों के संरक्षण और आदान-प्रदान के लिए वैश्विक पारंपरिक ज्ञान भंडार।
  - कृषि, मत्स्य पालन और आपदा प्रबंधन का समर्थन करने के लिए अंतरिक्ष डेटा साझा करने के लिए ओपन सैटेलाइट डेटा पार्टनरशिप।
- **महत्वपूर्ण खनिज सुरक्षा को मजबूत करना:** रीसाइक्लिंग, शहरी खनन और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण खनिज चक्रीय पहल का प्रस्ताव किया गया।
  - कुछ आपूर्तिकर्ताओं पर अत्यधिक निर्भरता को कम करने के लिए लोकतांत्रिक, विविध और पारदर्शी खनिज आपूर्ति श्रृंखलाओं का आह्वान किया।
- **सुरक्षित, समावेशी और जवाबदेह एआई को बढ़ावा देना:** जिम्मेदार एआई पर एक वैश्विक कॉम्पैक्ट की वकालत की, जो सुरक्षा-दर-डिजाइन, मानव निरीक्षण, पारदर्शिता और दुरुपयोग (डीपफेक, साइबर अपराध, आतंकवाद) पर सख्त नियंत्रण में निहित है।
  - भारत में आयोजित होने वाले एआई इम्पैक्ट समिट 2026 में भाग लेने के लिए आमंत्रित देशों को आमंत्रित किया गया है।
- **एक निष्पक्ष और प्रतिनिधि वैश्विक व्यवस्था की वकालत:** अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और एशिया-प्रशांत को शामिल करने के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार का पुरजोर समर्थन किया।
  - बहुपक्षवाद और नियम-आधारित वैश्विक प्रणाली के प्रति प्रतिबद्धता को मजबूत किया गया।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

प्रारंभिक परीक्षा

IMF की विदेशी मुद्रा विनिमय व्यवस्था

संदर्भ

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) ने अपनी नवीनतम समीक्षा में भारत की "वास्तविक" विनिमय दर व्यवस्था को "स्थिर" से "क्रमिक परिवर्तन-जैसी व्यवस्था" में पुनर्वर्गीकृत किया है।

समाचार के बारें में और अधिक जानकारी -

- IMF को उम्मीद है कि 2025-26 में भारत की जीडीपी वृद्धि 6.6% और उसके बाद 6.2% होगी, लेकिन अमेरिकी टैरिफ, मौसम के झटके और भू-राजनीति से जोखिम को चिह्नित करता है।

IMF की विदेशी मुद्रा विनिमय (FX) व्यवस्था क्या है -

- IMF प्रत्येक देश की विनिमय दर प्रणाली को दो तरीकों से वर्गीकृत करता है:
    - **विधिक रूप से(De jure):** देश आधिकारिक तौर पर क्या घोषित करता है।
    - **वास्तविक रूप से(De facto):** IMF व्यवहार में क्या देखता है (विनिमय दर और केंद्रीय बैंक के हस्तक्षेप का वास्तविक व्यवहार)।
        - वास्तविक वर्गीकरण अधिक महत्वपूर्ण है और इसमें 10 प्रमुख श्रेणियां हैं, जिन्हें कठोर आबद्धता, मृदु आबद्धता और तरल विनिमय दर व्यवस्था में बांटा गया है।

वास्तविक विदेशी मुद्रा विनिमय(FX) व्यवस्था -

- **कठोर आबद्धता (कम लचीलापन):**
    - **कोई अलग कानूनी निविदा नहीं:** देश किसी अन्य देश की मुद्रा का उपयोग करता है (उदाहरण के लिए, इक्वाडोर यूएसडी का उपयोग करता है)।
    - **मुद्रा बोर्ड व्यवस्था:** घरेलू मुद्रा कानूनी रूप से और कठोरता से किसी अन्य मुद्रा से जुड़ी होती है; मौद्रिक नीति के लिए न्यूनतम विवेक।
- **मृदु आबद्धता (मध्यवर्ती व्यवस्था):**
    - **पारंपरिक आबद्धता:** एक विदेशी मुद्रा या मुद्रा टोकरी से विनिमय दर को ±1% के भीतर स्थिर रखा जाता है।
    - **स्थिरीकृत व्यवस्था:** विनिमय दर छह महीनों तक एक निश्चित स्तर के ±2% के अंदर रहती है।
    - **क्रमिक परिवर्तन जैसी व्यवस्था (Crawl-Like Arrangement):** विनिमय दर छह महीनों या अधिक समय तक ±2% की सीमा में किसी प्रवृत्ति के अनुरूप होती है।
    - **धीरे-धीरे परिवर्तन वाली आबद्धता(Crawling Peg):** विनिमय दर पूर्व निर्धारित दर से समय-समय पर संशोधित होती है।
    - **मुद्रा टोकरी से आबद्धता:** विनिमय दर विशेष मुद्रा टोकरी (जैसे SDR) के अनुरूप होती है।
- **तरल विनिमय दर व्यवस्था:**
    - **प्रबंधित तरलता:** विनिमय दर बाजार द्वारा निर्धारित होती है, लेकिन केंद्रीय बैंक अस्थिरता को कम करने के लिए कभी-कभी हस्तक्षेप करता है।
    - **स्वतंत्र तरलता:** विनिमय दर पूरी तरह बाजार के नियंत्रण में होती है; केंद्रीय बैंक हस्तक्षेप लगभग न के बराबर करता है।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के बारे में-

- **यह संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की एक विशेष एजेंसी है, जिसकी स्थापना 1944 में ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में हुई थी। (मुख्यालय- वाशिंगटन डीसी)**
- **सदस्यता:** 190 देश।
- **यह केवल अपने सदस्य देशों को ऋण प्रदान करता है।**
- **IMF द्वारा जारी रिपोर्ट:**
  - विश्व आर्थिक आउटलुक (WEO)
  - वैश्विक वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (GFSR)
- **IMF की ऋण सुविधाएं:** विस्तारित निधि सुविधा, रैपिड फाइनेंसिंग इंस्ट्रूमेंट, रैपिड क्रेडिट सुविधा।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

सिंटर्ड रेयर अर्थ परमानेंट मैग्नेट (REPM) के निर्माण को बढ़ावा देने की योजना

संदर्भ

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने हाल ही में 'सिंटर्ड रेयर अर्थ परमानेंट मैग्नेट के निर्माण को बढ़ावा देने की योजना' को मंजूरी दी है।

योजना के बारे में -

- **कुल परिव्यय: 7,280 करोड़ रुपये**
- **अवधि:** 7 वर्ष (2 वर्ष की प्रारंभिक अवधि + 5 वर्ष की प्रोत्साहन अवधि)
- **प्रमुख विशेषताएँ:**
  - एकीकृत REPM उत्पादन क्षमता का 6,000 एमटीपीए स्थापित करना।
    - क्षमता पांच लाभार्थियों के बीच बांटी गई।
    - प्रत्येक को वैश्विक प्रतिस्पर्धी बोली के माध्यम से 1,200 एमटीपीए तक आवंटित किया गया था।
  - **पूर्ण मूल्य श्रृंखला को कवर करता है:** दुर्लभ मृदा ऑक्साइड ⟶ धातु ⟶ मिश्र धातु ⟶ सिंटर्ड स्थायी चुंबक शामिल हैं।
  - **प्रोत्साहन संरचना:**
    - **बिक्री-संबद्ध प्रोत्साहन (एसएलआई):** 6,450 करोड़ रुपये
      - REPM बिक्री पर 5 साल के लिए प्रदान किया गया।
    - **पूंजीगत सब्सिडी:** रु.750 करोड़
      - विनिर्माण सुविधाओं की स्थापना के लिए।
- **अपेक्षित परिणाम:**
  - एक पूर्ण घरेलू REPM आपूर्ति श्रृंखला का निर्माण।
  - महत्वपूर्ण खनिजों और चुंबक आयात में रणनीतिक कमजोरियों को कम करना।
  - मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भर भारत और उन्नत विनिर्माण को बढ़ावा
  - उच्च तकनीक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण रोजगार सृजन।
  - वैश्विक हरित प्रौद्योगिकी मूल्य श्रृंखलाओं में भारत की भूमिका को मजबूत करना।

रेयर अर्थ परमानेंट मैग्नेट (REPMs) क्या हैं?

- **नियोडिमियम (एनडी), प्रेसियोडायमियम (पीआर), समैरियम (एसएम), डिस्प्रोसियम (डीवाई), टर्बियम (टीबी) जैसे दुर्लभ मृदा तत्वों से बने उच्च शक्ति वाले स्थायी चुंबक।**
- **निम्नलिखित में इस्तेमाल होता है:**
  - इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी मोटर्स)
  - पवन टरबाइन
  - इलेक्ट्रॉनिक्स और सेमीकंडक्टर
  - एयरोस्पेस और रक्षा प्रणालियाँ
  - औद्योगिक रोबोटिक्स और स्वचालन।

स्रोत: पीआईबी

ऑपरेशन पवन

संदर्भ

सेना प्रमुख ने राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर ऑपरेशन पवन के बहादुरों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

ऑपरेशन पवन के बारे में -

- **ऑपरेशन पवन भारत-श्रीलंका समझौते (1987) को लागू करने के लिए 1987 से 1990 तक श्रीलंका में भारतीय शांति सेना (IPKF) का ऑपरेशन था।**
- **परिचालन क्षेत्र:** मुख्य रूप से उत्तरी श्रीलंका में जाफना प्रायद्वीप और लिट्टे के प्रभुत्व वाले अन्य क्षेत्र।
- **उद्देश्य:**
    - उत्तरी और पूर्वी श्रीलंका में लिट्टे और अन्य आतंकवादी समूहों को निरस्त्र करना।
    - शांति बहाल करना और श्रीलंका सरकार और तमिल समूहों के बीच राजनीतिक समाधान की सुविधा प्रदान करना।

स्रोत: द हिंदू

केरल की अदालत

संदर्भ

केरल उच्च न्यायालय द्वारा केरल के कोल्लम जिले में एक **ओपन एंड नेटवर्क्ड (ON)** अदालत स्थापित किए हुए एक वर्ष बीत चुका है।

ओपन एंड नेटवर्क्ड (ON) कोर्ट के बारे में

- **यह पूरी तरह से डिजिटल, 24×7 विशेष अदालत है जिसे निरंतर, प्रौद्योगिकी-सक्षम पहुंच के माध्यम से न्याय वितरण में तेजी लाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।**
- इसे राज्य के गृह विभाग द्वारा **प्रथम श्रेणी के न्यायिक मजिस्ट्रेट के अधीन एक विशेष अदालत के रूप में नामित किया गया है।**
- **कार्य**:
    - **24×7 उपलब्धता:** वादी ई-ट्रेजरी प्लेटफॉर्म के माध्यम से किसी भी समय मामले दर्ज कर सकते हैं, दस्तावेज़ अपलोड कर सकते हैं और शुल्क का भुगतान कर सकते हैं।
    - **त्वरित केस ट्रैकिंग:** एकीकृत डैशबोर्ड मामले की स्थिति, आगामी सुनवाई और प्रक्रियात्मक चरणों पर वास्तविक समय अपडेट प्रदान करते हैं।
    - **इलेक्ट्रॉनिक समन:** iCops प्रणाली के माध्यम से समन जारी करने से आरोपी व्यक्तियों और पुलिस अधिकारियों के साथ संचार में तेजी आती है।
    - **संस्थागत एकीकरण:** बैंकों, पुलिस और ट्रेजरी विभागों के साथ स्वचालित डेटा और दस्तावेज़ विनिमय तेज़ और समन्वित केस प्रबंधन सुनिश्चित करता है।

स्रोत: हिंदुस्तान टाइम्स

डॉ. वर्गीज कुरियन

संदर्भ

भारत **26 नवंबर** को डॉ. वर्गीज कुरियन की जयंती को चिह्नित करने के लिए **राष्ट्रीय दुग्ध दिवस** मनाता है।

डॉ. वर्गीज कुरियन -

- **1921 में केरल के कोझिकोड में जन्मे, उन्हें भारत की श्वेत क्रांति के प्रमुख निर्माता के रूप में जाना जाता है।**
- **ऑपरेशन फ्लड का नेतृत्व किया, जिसने भारत को दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक बना दिया।**
- राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी), गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ (जीसीएमएमएफ), और ग्रामीण प्रबंधन संस्थान आनंद (आईआरएमए) सहित प्रमुख संस्थानों के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में कार्य किया।
- **1979 में 'धारा' ब्रांड लॉन्च करके भारत के खाद्य तेल क्षेत्र का विस्तार किया।**
- **रेमन मैग्सेसे पुरस्कार (1963), विश्व खाद्य पुरस्कार (1989), और पद्म विभूषण (1999) जैसे प्रमुख पुरस्कारों से सम्मानित।**

स्रोत: द हिंदू

समाचार में प्रजातियां

क्यूबन गार (Cuban Gar)

समाचार? क्यूबा के ज़ापाटा दलदल में एक पुनरुद्धार परियोजना चल रही है - जो कि कैरिबियन की सबसे बड़ी अक्षुण्ण आर्द्रभूमि है - ताकि क्यूबन गार (मंजुआरी) को विलुप्त होने से बचाया जा सके।

क्यूबन गार के बारे में -

- **भौगोलिक वितरण:** पश्चिमी क्यूबा और इस्ला डे ला जुवेंटुड तक सीमित।
- **प्रमुख विशेषताएँ:**
  - **यह मुख्यत: उष्णकटिबंधीय मीठे पानी की प्रजाति है, हालाँकि यह खारे पानी के वातावरण में भी रह सकती है।**
  - इसे **मंजुआरी** भी कहा जाता है, यह प्राचीन मछली परिवार लेपिसोस्टेइडे से संबंधित है, जो लगभग 100 मिलियन वर्षों से अस्तित्व में है।
  - यह प्रजाति विभिन्न प्रकार के आवासों में पाई जाती है, जिनमें बड़ी झीलें, नदियाँ, धीमी गति से बहने वाली सहायक नदियाँ, बैकवाटर और तालाब शामिल हैं।
  - **क्यूबन गार घात लगाकर शिकार करने वाले जीव हैं, जो मुख्य रूप से छोटी मछलियों और जलीय क्रस्टेशियंस को खाते हैं।**
  - यह प्रजाति पानी में अमोनिया और नाइट्रेट के उच्च स्तर के प्रति अपनी उल्लेखनीय सहनशीलता के लिए जानी जाती है।
  - यह वायुमंडलीय हवा में भी साँस ले सकती है, जिससे यह कम ऑक्सीजन वाली परिस्थितियों में भी जीवित रह सकती है।
- **प्रमुख खतरे:** निवास स्थान का क्षरण और आक्रामक अफ्रीकी चलने वाली कैटफ़िश की शुरूआत।
- **IUCN स्थिति:** गंभीर रूप से लुप्तप्राय के रूप में वर्गीकृत।

स्रोत: इंडिया टुडे